परमजीत कौर

ई—मेल-parmjitmkt1984@gmail.com

वीडियो कॉल

"बधाई हो हरनाम कुरे ! तू दूसरे पोते की दादी बन गई.... यह बहुत बढ़िया हुआ.... भगवान का लाख -लाख शुक्र है लगा फिर बीडियो कॉल! मैं भी देख लूं पोते को।" पड़ोसन ने घर के अंदर आते हुआ कहा जो हरनाम कौर के घर में नीम बांधने की रस्म में शामिल होने आई थी

पड़ोसनों के आते ही हरनाम कौर ने नीम बांधने की रसम शुरू की और साथ ही अपने जेठ की बेटी को फोन थमाते हुए कहने लगी, "बेटा, पकड़ यह मोबाइल पहले मेरी बेटी को कॉल लगा आखिर बुआ है वह, वीडियो कॉल पर ही नीम को हाथ लगा देगी और फिर फोन लगाना मेरे बेटे को वो भी देख लेगा.. कैसी रौनकें लगी हैं हमारे आंगन में.. और सभी पड़ोसनों को पोता दिखा.. सभी वीडियो कॉल पर ही लोरीआं दे देंगी जैसे मैं देती हूँ।" हरनाम कौर ने सभी रस्मों को खुशी-खुशी पूरा किया और वीडियो कॉल से ही अपनी बेटी और बेटे के साथ खुशी साँझा की जो विदेश बैठे हैं।

नीम बांध कर सब अपने-अपने घर चले गए और हरनाम कौर के आंगन में सन्नाटा छा गया, हरनाम कौर का मन उदास हो गया और वह बगल में बैठे अपने पति से कहने लगी, "सरदारा ! विवाह के बाद जब मैं इस घर में आई, तो यह साँझा परिवार था। भगवान ने हमें दो बेटे और एक बेटी दी... हौसले में हम दिन भर काम करते थकते नहीं थे.. आंगन खुशियों से भरा होता था... बेटी की शादी की ख्वाहिश कितनी थी लेकिन आह! दामाद के परदेस जाने के लालच में मैंने वीडियो कॉल पर ही सारे शकुन कर दिए.. घर बनाते वक्त मेरे पाँव धरती पर न टिकते... कि मेरे पोते- पोतियां यहां मौज-मस्ती करेंगे.. पर मजबूरिओं ने बेटे परदेसी कर दिए और शकुन मैं वीडियो कॉल पर करती.. मुझे अपनी गोद सूनी लगती है क्योंकि वीडियो कॉल पर मैं लोरी तो दे देती हूँ पर गोद का स्नेह नहीं दे सकती अब जैसे जैसे उम्र बढ़ती जा रही है.. बुरे-बुरे विचार आँख नहीं लगने देते।"

पति ने उसे दिलासा देते हुए कहा, "क्या कमी हैं तुम्हें? दिन भर ऐसे ही सुबकती रहती हो। पूरे गांव में सबसे बड़ी कोठी हैं तेरी.. और कितने नौकर-चाकर। सारा दिन रानी बन बैठी रहती हो.. कोई कमी नहीं छोड़ी हमें सन्तान ने सुख देने में।"

हरनाम कौर ने घर में चारों ओर नजर दौड़ाते हुए कहा, "सही बात है सरदारा ! किसी चीज की कमी नहीं है... लेकिन ! मुझे डर है कि जीते-जी तो सारी रस्में वीडियो कॉल से कर ली... लेकिन आखरी समय में वीडियो कॉल से हमारे मुंह में पानी कैसे पड़ेगा? और मुझे डर है कि हमारी अंतिम रस्में भी कहीं वीडियो कॉल पर ही तो नहीं हो जाएगी..."

हिन्दी अनुवाद : जगदीश राय कुलरियाँ

परमजीत कौर शेखूपुर कलां : पंजाबी लघुकथा की संभावित लेखिका हैं। जिन्होंने बहुत ही कम समय में इस क्षेत्र में अपनी पूरी उपस्थिति दर्ज कराई है। वह मिनी कहानी लेखक मंच (रजि.) की सक्रिय सदस्य हैं। जिसके कारण यह दूर-दराज़ के लघुकथा आयोजनों में भी भाग ले चुकी है।